بسمہٖ تعالیٰ

लैलतुल् क़द्र की 4 नमाज़ें

2+2+2+2 रकअ़तें निम्न तरीक़े से पढ़ी जाएंगी.

1. सलात व सलाम की नमाज़ : 2 रकअ़त :

नमाज़ के हर रुक्न (यानी हर क़ियाम, रुकू, सजदे और क़अ़दे) में रसूल स० पर सलात व सलाम। क़ियाम में सूरः फ़ातिहः और सूरत के बाद, फिर रुकू में 'सुब्ह़ा-न रब्बी अल्-अ़ज़ीम' के बाद, समिअ़ल्लाहुलिमन् ह़मिदः रब्बना लकल्ह़म्द के बाद, दोनों सजदों में 'सुब्ह़ा-न रब्बी अल्-आ़ला' के बाद, दोनों सजदों के बीच बैठे में। इसी तरह दूसरी रक्अ़त में भी करें

2. मग़्फ़िरत की नमाज़ : 2 रकअ़त :

विधि ऊपर की तरह ही रहेगी, लेकिन हर रुक्न में सलात व सलाम के बजाय यह इस्तग़्फ़ार 3-3 बार पढ़ा जाएगा -

'रब्बिग़्फ़िर वह़म व अन्-त ख़ैरुर्राह़िमीन' رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ

(ए मेरे रब मेरी ख़ताओं को ढाँप दीजिये और रह़म फ़रमाईये। बेशक आप तो सब रह़म करने वालों से ज़्यादा रह़म फ़रमाने वाले हैं।)

और ऊपर वाले इस्तग़्फ़ार के बाद यह भी 3-3 बार पढ़ें

'अल्लाहुम्-म अन्तल्-अ़फ़ुव्वु तुहिब्बुल्-अ़फ़्व फ़अ़्फ़ु अन्नी اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي

(ए अल्लाह आप माफ़ फ़रमाने वाले हैं और माफ़ी आप को बहुत पसंद है, सो मुझे भी माफ़ कर दीजिये।)

3. शुक्रिये की नमाज़ : 2 रकअ़त :

नमाज़ के हर रुक्न में इसे 3-3 बार पढ़ें -

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ

'व इज़ त-अज़्-ज़-न रब्बुकुम ल-इन शकर्तुम ल-अज़ीदन्नकुम' (क़ुरआन 14:7)
(तुम्हारे रब ने यह क़ानून जारी कर दिया कि 'यदि तुम शुक्रगुज़ार हुए तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा, नेमतें बढ़ा दूँगा)

और ऊपर वाले इस्तग़फ़ार के बाद यह भी 3-3 बार पढ़ें

سبحان الله والحمد لله ولا إله إلا الله والله أكبر

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर

(अल्लाह हर ऐब, दोष से पाक है और वास्तविक तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है और अल्लाह सब से बड़ा है)

4. हाजत (अपनी ज़रूरतें मांगने) की नमाज़ : 2 रकअत :

नमाज़ के हर रुक्न में इसे 3-3 बार पढ़ें -

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ

'अम्मँय्युजीबुल्-मुज़्तर्-र इज़ा दआ़हु व यक्शिफ़ुस्सू-अ' (क़ुरआन 27:62)
(कौन है वह जो बेचैन की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है)

फिर एक बार यह पढ़ें

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ

'हुवल्लज़ी अन्-ज़लस्सकी-न-त फ़ी क़ुलूबिल्-मोमिनी-न लियज़्दादू ईमानम् म-अ़ ईमानिहिम'

(वही है जिसने ईमानवालों के दिलों में तस्कीन (प्रशान्ति) उतारी, ताकि अपने ईमान के साथ वे और ईमान का इज़ाफ़ा करें)

फिर एक बार 'क़ुल हुवल्लाह' पूरी सूरत बिस्मिल्लाह सहित पढ़ें